अत्यंत गोपनीय केवल आंतरिक एवं सीमित प्रयोग हेतु

अंक–योजना

विषय हिंदी (ऐच्छिक)

कक्षा – बारहवीं

विषय कोड संख्या –523

सामान्य निर्देश : –

1. परीक्षार्थियों के सही और उचित आकलन के लिए उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। मूल्यांकन में एक छोटी–सी त्रुटि भी गंभीर समस्या को जन्म दे सकती है, जो परीक्षार्थियों के भविष्य, शिक्षा प्रणाली और अध्यापन–व्यवस्था को भी प्रभावित कर सकती है। इससे बचने के लिए अनुरोध किया जाता है कि मूल्यांकन प्रारंभ करने से पूर्व ही आप मूल्यांकन निर्देशों को पढ़ और समझ लें।
2. योग्यता आधारित प्रश्नों का मूल्यांकन करते समय कृपया दिए गए उतरों को समझे, भले ही उत्तर मार्किंग स्कीम में न हो, छात्रों को उनकी योग्यता के आधार पर अंक दिए जाने चाहिए।
3. अंक योजना में उत्तरों के लिए केवल सुझाए गए मान बिंदु होते हैं। ये केवल दिशा–निर्देशों की प्रकृति के हैं और पूर्ण नहीं हैं। यदि परीक्षार्थियों की अभिव्यक्ति सही है तो उसके अनुसार नियत अंक दिए जाने चाहिए।
4. परीक्षक सही उत्तर पर सही का चिह्न (√) लगाएँ और गलत उतर पर गलत का (×) मूल्यांकनकर्ता द्वारा ये चिह्न न लगाने से ऐसा समझ में आता है कि उत्तर सही है, परंतु उस पर अंक नहीं दिए गए।
5. यदि किसी प्रश्न के उपभाग हो तो कृपया प्रश्नों के उपभागों के उत्तरों पर दायी ओर अंक दिए जाएँ। बाद में इन उपभागों के अंकों का योग बायाँ और के हाशिये में लिखकर उसे गोलाकृत कर दिया जाए।
6. यदि किसी प्रश्न के कोई उपभाग न हो तो बायीं ओर के हाशिये में अंक दिए जाएँ और उन्हें गोलाकृत किया जाए।
7. यदि परीक्षार्थी ने किसी प्रश्न का उत्तर दो स्थानों पर लिख दिया है और किसी को काटा नहीं है तो जिस उत्तर पर अधिक अंक प्राप्त हो रहे हो, उस पर अंक दें और दूसरे को काट दें। यदि परीक्षार्थी ने अतिरिक्त प्रश्न/प्रश्नों का उत्तर दे दिया है तो जिन उत्तरों पर अधिक अंक प्राप्त हो रहे हो, उन्हें ही स्वीकार करे, उन्हीं पर अंक है।
8. एक ही प्रकार की अशुद्धि बार–बार हो तो उसे अनदेखा करें और उस पर हर बार अंक न काटे जाएँ।
9. यहाँ यह ध्यान रखना होगा कि मूल्यांकन में पूर्ण अंक पैमाना 0–80 (उदाहरण 0–80 अंक जैसा कि प्रश्न में दिया गया है) का प्रयोग अभीष्ट है, अर्थात परीक्षार्थी ने यदि सभी अपेक्षित उत्तर–बिंदुओं का उल्लेख किया है तो उसे पूरे अंक देने में संकोच न करें।
10. ये सुनिश्चित करें कि उत्तर पुस्तिका के अंदर दिए गए अंकों का आवरण के अंकों के साथ मिलान हो।
11. आवरण पृष्ठ पर दो स्तंभों के अंकों का योग जाँच लें ।
12. उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हुए यदि कोई उत्तर पूर्ण रूप से गलत हो तो उस पर (x) निशान लगाएँ और शून्य (0) अंक दें।
13. उत्तर पुस्तिका में किसी प्रश्न का बिना जाँचे हुए छूट जाना या योग में किसी भूल का पता लगना, मूल्यांकन समिति के सभी लोगों की छवि को और बोर्ड की प्रतिष्ठा को धूमिल करता है। परीक्षक सुनिश्चित करें कि सभी उत्तरों का मूल्यांकन हुआ है। आवरण पृष्ठ पर तथा योग में कोई अशुद्धि नहीं रह गई है तथा कुल योग को शब्दों और अंकों में लिखा गया है।

उपर्युक्त मूल्यांकन निर्देश उत्तर–पुस्तिकाओं की जाँच हेतु आदेश नहीं अपितु केवल निर्देश हैं। यदि इन मूल्यांकन निर्देशों में किसी प्रकार की त्रुटि हो, किसी प्रश्न का उत्तर स्पष्ट न हो, अंक योजना में दिए गए उत्तर से अतिरिक्त कोई और भी उत्तर सही हो, तो परीक्षक अपने विवेकानुसार उस प्रश्न का मूल्यांकन करे।

अंक–योजना

विषय हिंदी (ऐच्छिक)

विषय कोड संख्या –523

कक्षा : बारहवीं अधिकतम अंक 80

सामान्य निर्देश : –

1. अंक योजना का उद्देश्य मूल्यांकनको अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है।
2. वर्णनात्मक प्रश्नों के अंक योजना में दिए गए उत्तर बिंदु अंतिम नहीं है बल्कि ये सुझावात्मक एवम् सांकेतिक हैं।
3. यदि परीक्षार्थी इन सांकेतिक बिंदुओं से भिन्न , किन्तु उपयुक्त उत्तर है, तो उन्हें अंक दिए जाएँ।
4. मूल्यांकन कार्य निजी व्याख्या के अनुसार नहीं बल्कि अंक योजना में दिए गए निर्देशानुसार ही किया जाए।

प्रश्न संख्या	प्रश्न उपभाग	उत्तर संकेत/ मुख्य बिंदु	निर्धारित अंक विभाजन
1			1x5=5
	I. II. III. IV. . /	ख) प्रकृति पर ग) क और ख दोनों सही हैं ख) प्रकृति पहले ख) विज्ञान के उद्यमशीलता के बल पर घ) उपर्युक्त सभी	1 1 1 1 1
2			1x5=5
	I. II. III. IV. V. .	क) धीरज क) राष्ट्र घ) राष्ट्र भूमि क) जीवन भर क) आकुल	1 1 1 1 1
3			1x 5=5
	I. II. III. IV. V.	(क) कपड़ा (ख) अपना करतब दिखाया (क) व्यवस्था का (घ) सृंगावली क) रामागिरी पर	1 1 1 1 1
4			1x5=5
	I. II. III. IV. . V.	मन की अंतवृत्तियां परवश होने का अर्थ है खुशामद करना, दांत निपोरना, चाटुकारिता, हां हजूरी। वह वशी है वह बैरागी है राजा जनक से पाठ का नाम –कुटज , लेखक – हज़ारी प्रसाद द्ववेदी	1 1 1 1 1

5		प्रश्नों के उत्तर	3,3,2,2
	क	लेखक ने अपने पिता की निम्नलिखितविशेषताओं का उल्लेख किया है : – पिताजी फारसी के अच्छे ज्ञाता थे।– वे पुरानी हिंदी के बड़े प्रेमी थे। – उन्हें फारसी कवियों की उक्तियों को हिंदी कवियों की उवितयों के साथ मिलाने में बड़ा आनंद आता था।– वे रात के समय 'रामचरितमानस' और रामचंद्रिका' 'को घर के लोगों के सम्मुख बड़े चित्राकर्षक ढंग से पढ़ा करते थे।– उन्हें भारतेंदु जी के नाटक बहुत पसंद थे। – वे लेखक की पढ़ाई को ध्यान में रखकर घर में आई पुस्तकों को छिपा देते थे। प्रकृति के कारण विस्थापन अस्थायी होता है। बाढ़ या भूकंप के कारण लोग अपना घर-बार छोड़कर कुछ समय के लिए जरूर बाहर जाकर बस जाते हैं, पर मुसीबत के टलते ही वे दोबारा अपने पुराने परिवेश में लौट आते हैं। औद्योगीकरण के कारण हुए विस्थापन में लोग फिर कभी लौटकर अपने घर वापस नहीं आ पाते। उनके घर टूट चुके होते हैं जमीन पर कोई उद्योग स्थापित हो चुका होता है। उसका परिवेश और आवास-स्थल हमेशा के लिए नष्ट हो जाते हैं। बड़ी बहुरिया उस गाँव की लक्ष्मी थी। अपने गाँव की लक्ष्मी की दशा दूसरे गाँव में जाकर सुनाना उसे अपमान लगा। उसे यह सोचकर बहुत शर्म आई की उसके गाँव की लक्ष्मी इतने कष्ट झेल रही है और गाँव अब तक कुछ नहीं कर पाया। उनके रहते हुए उनके गाँव की लक्ष्मी किसी और गाँव से सहायता माँगे, यह तो गाँववालों के लिए डूब मरने वाली बात है। अतः वह बड़ी बहुरिया का संवाद सुना नहीं सका। 'कुटज' हम सभी को उपदेश देता है कि विकट परिस्थितियों में हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। हमें धीरज रखना चाहिए और विकट परिस्थितियों में अपने परिश्रम और शक्ति से काम लेना चाहिए। यदि हम निरंतर प्रयास करते हैं, तो हम इन विकट परिस्थितियों को अपने आगे झुकने के लिए विवश कर देते हैं। विकट परिस्थितियों से गुजरने वाला व्यक्ति सोने के समान चमक कर निकलता है। जो विकट परिस्थितियों को झेल लेता है फिर उसे कोई गिरा नहीं सकता है।	3
	ख		3

	ग		2
	घ		2
6			1×5=5
	I. II. III. IV. V.	घ) मालवा के राजा बंधु वर्मा की बहन क) सरोज ख) व्यक्ति का क) सृजन के लिए ख) पुस	1 1 1 1 1
7		सप्रसंग व्याख्या	5×1=5
		प्रसंग व्याख्या काव्य –सौन्दर्य	1 3 2
8			3,3,2,2
	क	सरोज के विवाह की अन्य विवाहों से भिन्नता– (i) सरोज का विवाह अत्यंत सादगी से सम्पन्न हुआ। इसमें कोई बड़ा समारोह आयोजित नहीं किया गया।) सरोज के विवाह में आर्थिक अभाव के कारण सगे–संबधियों को आमंत्रित नहीं किया गया था, जबकि अन्य विवाहों में सारे सगे–संबंधी	3

	ख	बुलाए जाते हैं। (विवाह में रात–दिन कभी मंगल गीत–गायन और राग–रंग भरे मनोरंजन कार्यक्रम नहीं हुए। जबकि अन्य विवाहों में हास्य–विनोद भरे अनेक मनोरंजक कार्यक्रम होते हैं और विभिन्न रस्मों पर मंगल–गीत गाए जाते हैं।) सरोज की माँ स्वर्ग गई थी, अतः विदाई के समय माँ के द्वारा दी जाने वाली शिक्षाएँ उसे पिता निराला जी ने ही दी। विवाह में पुष्प–सेज को सजाने का कार्य महिलाएँ करती हैं, परंतु मातृविहीन होने के कारण सरोज की पुष्प–सेज पिता द्वारा ही सजाई गई। माघ मास में शीत चरमसीमा पर होता है। अब पाला पड़ने लगता है। दिरहिणी के लिए माघ मास के जाड़े में विरह को झेलना मृत्यु के समान प्रतीत होता है। पति के आए बिना माघ मास का जाड़ा उसका पीछा नहीं छोड़ेगा। अब विरहिणी नायिका के मन में काम भाव उत्पन्न हो रहा है, अतः उसे प्रिय–मिलन की इच्छा हो रही है। माघ मास में वर्षा भी होती है। वर्षा के कारण नायिका के कपड़े गीले हो जाते हैं और वे बाण के समान चुभते हैं। वियोग के कारण न तो वह रेशमी वस्त्र पहन पा रही है और न गले में हार पहन पाती है। विरह में वह सूखकर तिनके की भाँति हो गई है। विरह उसे जलाकर राख बनाकर उड़ा देने पर तुला प्रतीत होता है। कवि के अनुसार उसकी प्रेमिका उसकी ओर से कठोर बनी हुई है। वह न उससे मिलने आती है और न उसे कोई संदेशा भेजती है। कवि कहता है कि वह मौन होकर देखना चाहता है कि उसकी प्रेमिका कब तक उसकी ओर कठोर रहती है। वह बार–बार उसे पुकार रहा है। उसकी पुकार को कब उसकी प्रेमिका अनसुना करती है, कवि यही देखना चाहता है। बनारस में वसंत का आगमन अचानक होता है। उसके आगमन के समय बनारस के मुहल्लों में धूल का बवंडर उठता प्रतीत होता है। लोगों की जीभ पर धूल की किरकिराहट का अनुभव होने लगता है। यह वसंत उस वसंत से भिन्न प्रकार का होता है जैसा वसंत के बारे में माना जाता है। यहाँ वह बहार नहीं आती है जो वसंत के साथ जुड़ी है। बनारस में तो गंगा, गंगा के घाट तथा मंदिरों और घाटों के किनारे बैठे भिखारियों के कटोरों में वसंत उतरता प्रतीत होता है। इन स्थानों पर भीड़ बढ़ जाती है। भिखारियों को ज्यादा भीख मिलने लगती है।	3	

			2
			2

9		**अंतराल भाग –2 के आधार पर प्रश्नों के उत्तर**	3,2,2
	क	धरती के तापमान में बढोत्तरी का सबसे प्रमुख कारण है – वातावरण को गर्म करने वाली गैसों का अधिक से अधिक उत्सर्जन | कार्बन डाई ऑक्साइड , कार्बन मोनो ऑक्साइड , क्लोरो–फ्लोरो कार्बन आदि गैसे पृथ्वी के तापमान को बढाती है | ये गैसें अमेरिका और यूरूप के विकसित देश सबसे अधिक मात्रा में उत्सर्जित करते हैं जिसके कारण पृथ्वी के तापमान में तीन डिग्री सेल्सियस की बढोत्तरी हुई है भेरो सूरदास से बहुत नाराज है जब भेरो तथा उसकी पत्नी के बीच में लड़ाई हुई है तो नाराज सुभागी सूरदास के घर रहने चली गई भेरो को यह बात अच्छी नही लगी थी सूरदास हताश सुभागी को बेसहरा नही करना है अंत वह उसे मना नही कर पाया था और उसे अपने घर में रहने दिया था भेरो के लिए यह बात असहनीय है भेरो को सूरदास का यह करना अपमान लगा था।	3
	ख	उत्तरः गर्मी और लू से बचने के लिए निम्नलिखित उपाय अपनाए जाते थे : (क) प्याज को धोती और कुर्ते में गाँठ लगाकर बांधा जाता था। (ख) कच्चे आम को आग में पका कर उसका शरबत बना कर पिया जाता था। ग) कच्चे आम को आग में पकाकर / तलकर या उबालकर उस से सर को धोया जाता था। घ) कच्चे आम को भुना जाता था और इसका शरबत गुड़ और चीनी के साथ मिलाया जाता था।इसे शरीर पर लगाया जाला था और इससे स्नान किया जाता था। प्याज बाँधने आम पन्ना पीने, भुने हुए आम से सिर धोने वाले उपाय से कहीं ना कहीं अधिक या कम लेकिन अवगत ती हूँ पर शरीर पर लगाने और नहाने वाला उपाय मैंने ती न देखा है न सुना है।	2

	ग		2
10	क		1×5=5
		I. 1556 , गोवा में II. किसी समाचार संगठन के लिए एक निश्चित मानदेय पर निश्चित काम करने वाला। III. IV. V. रिपोर्टर जिसकी रुचि किसी विशेष मुद्दे में होती है। रीडिफ डाटकोम उल्टा पिरामिड शैली	1 1 1 1
11			3, 2
		किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हटकर किया गया लेखन विशेष लेखन कहलाता है. यह लेखन अखबारों, पत्रिकाओं, टीवी, और रेडियो चैनलों में होता है. विशेष लेखन के लिए अलग डेस्क और पत्रकारों का समूह होता है. विशेष लेखन के अंतर्गत रिपोर्टिंग के अलावा विशेष विषय पर फीचर , टिप्पणी , साक्षात्कार , लेख , समीक्षा और स्तंभ भी हैं। भाषा, शैली, बिंब, छंद, अलंकार, अनुप्रास, स्वर-संगति, व्यंजन, आलंकारिक भाषा, तुकबंदी. कविता के बारे में कुछ और बातें: कविता, साहित्य या कलात्मक लेखन का एक रूप है. कविता में लय, शब्द चयन, ध्वनि, तुकबंदी, और संरचना का इस्तेमाल किया जाता है. कविता का मकसद पाठक की भावनाओं को झकझोरना और सौंदर्यभाव को जागृत करना होता है. कविता में कवि अपनी वैयक्तिक सोच, दृष्टि, और दुनिया को देखने के नज़रिए को बयां करता है. कविता के कई प्रकार हैं, जिन्हें तीन मुख्य शैलियों में बांटा जा सकता है. ये शैलियां हैं – कथात्मक कविता, नाटकीय कविता, और गीतात्मक कविता.	3 2
12	ग	जिस विषय पर लिखना है लेखक को उसकी संपूर्ण जानकारी होनी चाहिए। विषय पर लिखने से पहले लेखक को अपने मस्तिष्क में उसकी	5x1=5

		एक उचित रूपरेखा बना लेनी चाहिए। विषय से जुड़े तथ्यों से उचित तालमेल होना चाहिए। विचार विषय से सुसम्बद्ध तथा संगत होने चाहिए। अप्रत्याशित विषयों के लेखन में 'मैं शैली का प्रयोग करना चाहिए। अप्रत्याशित विषयों पर लिखते समय लेखक को विषय से हटकर अपनी विद्वता को प्रकट नहीं करना चाहिए। **अथवा** नाटक और कहानी में अंतर– कहानी में चित्रण होता है, नाटक मे मंचन होता है। कहानी का संबंध मात्र लेखक और पाठक से होता है, जबकि नाटक का संबंध पटकथा, पात्र, निर्देशक, दर्शक, इतिहास से होता है। कहानी कही व पढी जाती है, नाटक दर्शाए जाते हैं, उन्हें चित्रो व दृश्य मे बांटा जाता है। कहानी में मात्र पुस्तक या कथा कहने वालों की आवश्यकता होती है, किंतु नाटक में मंच, लाइट, पात्र, मेकअप, अभिनेता, निर्देशक इत्यादि की आवश्यकता होती है। नाटक के दृश्यों की छाप अधिक समय तक दर्शकों के मस्तिष्क पर रहती है, कहानी मस्तिष्क पटल पर समय के साथ धुंधली पड़ जाती है।	
13		क)	2x4=8
		मदन लाल ढींगरा एक भारतीय क्रांतिकारी थे जिन्हें 17 अगस्त 1909 को मात्र 24 वर्ष की आयु में ब्रिटिश अधिकारी कर्जन वायली की हत्या के लिए फांसी पर लटका दिया गया था। वे एक अडिग देशभक्त थे, उनके परिवार ने उनके ब्रिटिश विरोधी झुकाव के कारण उन्हें त्याग दिया था – इतना कि उनकी मृत्यु के बाद भी उनके परिवार ने उनका शव लेने से इनकार कर दिया। ख) वह एक हिंदू राजा था और उसने पहले आदिल शाह सूरी (सूरी वंश) के एक सामान्य और मुख्यमंत्री के रूप में कार्य किया था। उसने आदिल शाह सूरी के लिए अफगान विद्रोहियों और हुमायूँ और अकबर की मुगल सेना को हराकर 22 युद्ध जीते थे। उन्होंने दिल्ली पर अधिकार करने के बाद 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण की। ग) सरदार पटेल के जीवन से हमें यह सीख मिलती है कि अगर हम दृढ़ता से किसी उद्देश्य की ओर प्रयास करें तो हम सफलता प्राप्त कर सकते हैं। गीता में आत्मा, परमात्मा, भक्ति, कर्म, जीवन आदि का वृहद रूप से वर्णन किया गया है. गीता से हमें यह ज्ञान मिलता है कि व्यक्ति को केवल अपने काम और कर्म पर ध्यान देना चाहिए. साथ ही कर्म करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हम जो भी कर्म कर रहे हैं, उसका फल भी हमें निश्चित ही प्राप्त होगा. .	2 2 2

		2) 2